उत्तराखंड में 6,500 फीट की ऊँचाई पर देखा गया मोर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तराखंड के बागेश्वर ज़िले में **6,500 फीट** की असामान्य ऊँचाई पर मोर देखे गए, जो बढ़ती मानवीय गतिविधियों के कारण पारिस्थितिकि परिवर्तन का संकेत है।

मुख्य बिंदु

- आमतौर पर 1,600 फीट की ऊँचाई पर दिखने वाला मोर, **काफलीगैर** (अप्रैल) और **कठायतबारा** (अक्तूबर) वन शृंखलाओं में देखा गया।
  - विशेषज्ञों का मानना है कि मानवीय विस्तार के कारण अधिक ऊँचाई पर **गर्म परिस्थितियाँ** इस पक्षी के **ऊँचाई की ओर प्रवास** का कारण हो सकती हैं।
  - भारतीय वन्यजीव संस्थान (Wildlife Institute of India- WII) के विशेषज्ञों का सुझाव है कि यह **मौसमी बदलाव** हो सकता है, क्योंकि सर्दियों का निम्न तापमान पक्षी को पीछे हटने के लिये प्रेरित कर सकता है।

???

//

- 'पीफाउल', मोर की विभिन्न प्रजातियों का सामूहिक नाम है। नर मोर को 'पीकॉक' (Peacock) कहा जाता है, जबकि मादा मोर को 'पीहेन' (Peahen) कहा जाता है।
  - मोर **भारत का राष्ट्रीय पक्षी** भी है।
  - मोर (पावो क्रिस्टेटस) **फासियानिडे परिवार** से संबंधित है। ये उड़ने वाले सभी पक्षियों में सबसे बड़े हैं।
    - 'फासियानिडे' एक 'तीतर' परिवार है, जिसके सदस्यों में जंगली अथवा घरेलू मुर्गी, मोर, तीतर और बटेर शामिल हैं।
  - मोर की दो सबसे अधिक पहचानी जाने वाली प्रजातियाँ हैं:
    - **नीला मोर/भारतीय मोर भारत और श्रीलंका में पाया जाता है।**
    - **हरा या जावाई मोर (पावो म्यूटिकस) म्याँमार (बर्मा) और जावा** में पाया जाता है।

- **पर्यावास:**
  - भारतीय मोर, मूलतः **भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका** के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।
  - यह प्रजाति **वर्तमान में सबसे अधिक मध्य केरल में पाई जाती है,** इसके बाद राज्य के दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पश्चिम हिस्सों का स्थान है।
    - **वर्तमान में केरल में** तकरीबन **19% क्षेत्र इस प्रजाति का आवासीय क्षेत्र है और यह वर्ष 2050 तक 40-50%** तक बढ़ सकता है।
  - वे वनों के किनारों और कृषियोग्य क्षेत्रों में रहने के लिये अच्छी तरह से अनुकूलित हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/peacock-spotted-at-6500-feet-in-uttarakhand